'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Vol. 1 Issue. 1
ISSN : 2348-7143 (Online)
Jan-March - 2014

जीवनानुभव की अभिव्यक्ति - प्रभा खेतान के उपन्यास

- प्रा. डॉ.संजय विक्रम ढोडरे
हिन्दी विभाग प्रमुख तथा शोध निर्देशक
अभय महिला महाविद्यालय, धुले ४२४ ००२
(उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय,जलगॉव संलग्न)

आदिवासी समाज हा भारतातील एक महत्त्वपूर्ण समाज मानला जातो. त्याची आपली एक बोलीभाषा, संस्कृती आणि ओळख आहे. हा समाज पूर्वीपासूनच डोंगरी भागात वास्तव्य करीत असल्याने या समाजाचा सामाजिक व आर्थिक विकास हवा तेवढया प्रमाणात झालेला दिसून येत नाही. तसेच या समाजासाठी शासनस्तरांवरुन अनेक सुविधा किंवा योजना देण्यात येत असल्या तरी, बोलीभाषा, आत्मविश्वास, उदासिनता, भौतिकसुविधांच्या अभावामूळे यांच्यापर्यंत सहज शिक्षण पोहचत नाही. तरी शासनास्तरांवरुन आश्रमशाळा, शिष्यवृत्ती, विविध प्रकल्पातंर्गत यांच्या शिक्षणाची सोय करण्याचा प्रयत्न होत आहे. महत्त्वपूर्ण एकच यांच्या शिक्षणाचा उद्येश सफल झाल्यास यांच्यातील प्रतिभावंताना न्याय तर मिळेलच परंतु त्यांच्या मार्फतच या समाजाला प्रवाहात सामील करण्यास मदत होईल.

अपने-अपने चेहरे १९९६ में किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित बहुचर्चित औपन्यासिक कृति है। यह प्रभा जी का संपन्न मारवाडी उदयोगपतियों के आंतरिक जीवन का यथार्थ चित्रण करनेवाला श्रेष्ठ उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रभा जी ने स्त्री की नियति के एक दूसरे पहलू को परिभाषित करने की कोशिश की है। स्त्री को लेकर प्रभा जी के पास कुछ बांध प्रश्न और निष्कर्ष है, जो इस उपन्यास में गहरी संवेदनशीलता के साथ व्यक्ति हुए हैं। प्रभा जी का यह उपन्यास विवाह, पति, बशे आदि से हटकर स्त्री का अस्तित्व है, यह बतलाने की कोशिश करता है। स्त्री का जीवन केवल पुरूष की तलाश नहीं है, बल्कि अपनी कोई अलग पहचान भी है। उसकी अपनी कोई सार्थकता भी है। रमा इस उपन्यास की मुख्य नायिका है। पूरा कथानक उसके इर्द-गिर्द घूमता हैं प्रभा जी रमा के माध्यम से यह बताना चाहती है कि स्त्री प्यार तो एक बार करती है, एक बार एक ही पुरूष से। कभी शादी के बाद कभी शादी से पहले उसके बाद तो अपने आपको झेलना सीखती है।

प्रभा जी की आत्मकथा को पढ़ने के उपरान्त ऐसा महसूस होता है कि, प्रभा जी ने अपने वास्तविक जीवन में दूसरी औरत की पीड़ा को सहा है। उनकी वही पीड़ा कथावस्तु बनकर इस उपन्यास में हमारे सामने आयी है। इस उपन्यास की तथा नायिका से बारबार दूसरी औरत होने की पीड़ा के अतंर्द्वंद्व से रुलाती है क्योंकि उपन्यास की नायिका रमा एक विवाहित पुरूष राजेन्द्र गोयनका से प्यार करती है, जो तीन बशो के पिता है। राजेन्द्र गोयनका और रमा की उम्र में अठारह साल का अंतर है। इस बात की खबर परिवार के साथ-साथ समाज को भी है। यहॉ तक की उनके घर का नौकर नथ्थू महाराज भी कहता है कि, मैं तो जानता हूँ कि बाबु घर में इस वक्त खाना खा लें तो रमा बाई का मुँह फुल जाएगा। एक म्यान में कभी दो तलवारे समाई हैं?[१] राजेंद्र गोयनका एक डरपोक इन्सान है; वह समाज के डर से ना तो बीवी को तलाक

देता है, और ना ही रमा से शादी करता है। वह रमा को दोस्त बनाकर रखना चाहता है। लेकिन किसी विवाहित पुरूष ने स्त्री को दोस्त बनाये रखना परम्परागत भारतीय समाज को मंजूर नहीं होता। वह उस दोस्त को दूसरी औरत के रूप में देखता है। यदि उसे समाज की स्वीकृति पानी है तो उसका पत्नी होना बहुत ही अनिवार्य है। अर्थात पति के नाम का सिंदूर उसकी मांग में होना बहुत जरुरी है। जिसकी मांग में सिंदूर है, वह पहली पत्नी का स्थान पाती है। और जिसकी मांग में पति के नाम सिंदूर नहीं और केवल दोस्त बनकर रहना चाहती हैं, वह दूसरी औरत होती है।

प्रभा जी ने इसमें रमा के माध्यम से अमीर मारवाडी कट्टर परंपरावादी समाज की वास्तविकता का पर्दापाश किया है। हेमा जायसवाल के मतानुसार, यह उपन्यास एक अमीर परिवार में होने वाली समस्याओं को दर्शाता है। ऐसा लगता है मानो प्रभा जी ने हमारी ही कहानी लिख मारी हो। [२] रमा भले ही मांग में सिंदुर सजा नहीं पाती लेकिन गोयनका परिवार के लिए वह संपूर्ण आहुति देती है। गोयनका हाउस में उसे डस्टबिन कि तरह एक कोने में रख दिया जाता है। मारवाडी परिवार की रमा हारती है, टूटती है, तार-तार होती है लेकिन प्रेम के पक्ष को नहीं छोड़ती।

रमा को लेकर प्रभा जी ने मारवाडी जीवन शैली का परिचय दिया है। इसमें मानवीय रिश्तों की उलझन है। इस में प्रभा जी ने एक त्रिकोन बनाये रखा है, जिस में पति, पत्नी और वह का समावेश है। यह त्रिकोण पुरूष के जीवन में हमेशा बना रहेगा क्योंकि पुरूष कभी एक से बंधा नहीं है।

अग्निसंभवा -

यह प्रभा खेतान की कथा हंस पत्रिका में मार्च १९९२ से मई १९९२ तक शृंखलाबध्द रुप में प्रकाशित उपन्यास है। प्रभा जी ने इस में मुख्यत: दो विषयों पर प्रकाश डाला है। एक तो चीन की राजनीतिक उठापटक में बीजिंग विश्वविदयालय के छात्रों ने थैमैन स्वायर में लिए आंदोलन के प्रति सरकार का रवैया और दूसरा चीन के मामूली किसान की बेटी उपन्यास नायिका आइवी के संघर्षमय जीवन से उभरकर हांगकांग क ब्रांच मेनेजन के पदपर नियुक्त होना। प्रभा जी चीन की राजनीतिक समस्या को पात्र वॉग के पत्रों के माध्यम से बताना चाहती है। साथ ही चीन पर अमरिका, हांगकांग एवं रुस की बढ़ती दादागीरी के साथ ही गोरी चमडी के शोषणपूर्ण नीति का भी पर्दाफाश करना चाहती है।

प्रभा जी उपन्यास के आरंभ में ही पात्र वॉग ने अपनी मॉ को लिखे पत्रों को पाठकों के सामने रखती और चीन की आंतरिक व्यवस्था से परिचित करवाकर उसके इतिहास के पर्त-दर-पर्त खोलना चाहती है। वह कहती है, क्या वे महज एक बेटे के पत्र थे अपनी मॉ के नाम? या फिर इतिहास के इपक थे जिन्हें समझना जरुरी था; जिन्हें बिना समझे स्थान और काला के परे नहीं जा पाते। [३] वॉग एक मामूली किसान का बेटा है, वह हांगकांग की भोगवादी दुनिया को छोड बीजिंग में अपनी जडों को समझने आता है। उसका देश प्रेम उसे वहॉ खिच लाता है। वह चीन में वैचारिक विकास से समन्वय स्थापित करना चाहता है। हिंसा केबदले अहिंसा के पथ पर चलना चाहता है। माओं की पीपल्स रिपब्लिक ऑफचाइना ने पिछले चालिस वर्षों से किये हुए वादों की पूर्ति चाहता है। चीन की साम्यवादी तानाशाही मुक्ति, समाज में वास्तव का जनतंत्र जनता का राज आदि को स्थापित करना चाहता है। साथ ही चीन में स्थित नौकरशाही के जुल्म और व्याप्त

भ्रष्टाचार समाप्त करना चाहता है। इसलिए राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन चाहता है। इसलिए राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन चाहता है। वैसे परिवर्तन अपेक्षा करना और दूसरे के विचारों को पढ़ना कोई गलत नहीं है। वॉग के मन में व्यवस्था के प्रति असंतोष है, वह व्यवस्था से आंदोलन करना चाहता है। परंतु असंतोष और आंदोलन से उसका देशप्रेम की कम नहीं होता वह चीन की प्राचीन संस्कृति पर गर्व करता है।

प्रभा जी ने आइवी को ऐसी औरत के रुप में प्रस्तुत किया है जो सनकी जरुर है मगर बेहत ईमानदार है वह चीन में आर्थिक प्रगति लाकर सच्चे समाजवाद की स्थापना करना चाहती है। वह कहती है, मैं चीन के साथ हूँ मगर हमारे देश में आर्थिक प्रगति होनी चाहिए। यह प्रगति हांगकांग ला सकती है। बिना आर्थिक प्रगति के कैसा मार्क्सवाद। प्रभा जी आईवी के चरित्र द्वारा वैश्विक धरातल पर चीनी महिला के संघर्ष को दिखाना चाहती है। उसके आत्मसम्मान और स्वाभिमान को सामने रख कर कहना चाहती है कि स्त्री में एक देवी श क्ति होती है। यदि वह कुछ करने की ठान ले तो फिर वह किसी भी सामान्य परिवार की स्त्री हो मार्ग में आने वाली तमाम बाधाओं को निपटकर अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने हेतू मेहनत के बलबूते पर ड्राइव्हर से लेकर ब्रॉच मॅनेजर के पद पर पहूँचकर सफलता का परचम लहरा सकती है। जिसका प्रमाण हमें यहॉ आईवी द्वारा मिलता है।

एड्स -

एड्स १९९३ में वाराणसी से आज समाचार पत्रा के दीपावली विशेषांक में प्रकाशित उपन्यास है। लेखिका इसे उपन्यासिका बताती है, लेकिन पढने के बाद इसे बउी कहानी ही कहा जा सकता है। जिसको लेकर डॉ.उषाकीर्ति राणावत जी लिखती हैं कि, हैं तो यह कहानी लेकिन लेखिका ने इसे उपन्यास बताया है। [४] प्रभा जी ने इस उपन्यास का शाशी की एड्स देकर यह बताना चाहा है कि आज वैश्विक स्तर पर इस महाभयंकर बीमारी ने अपना बड़ा प्रभाव जमाया है। यह एक ना ईलाज बिमारी, जो मानव श रीर में गुप्त रुप में प्रवेश कर धीरे-धीरे उसके अंदर की रोगप्रतिरोधक शक्ति को पूर्णत: नष्ट कर अपनी जड़ मजबूत करती है। एक बार मानव शरीर में प्रवेश कर उसे मृत्यु की शैय्या पर लिटाकर ही दम लेती हैं। प्रभा जी ने इस बिमारी का जिक्र एण्डू स्पेन्सर नाम के एक पुरुष पात्र से करवाना चाहा है जिसकी मुलाकात विदेश यात्रा दौरान प्लेन में होती है। उसका एक सफल दाम्पत्य जीवन अपने जिगरी दोस्त के कारण तहस-नहस हो जाता है। एण्डू की पत्नी पति के मित्र से शरीरिक संबंध रखती है। जिससे उसे एड्स की यह महाभयंकर बिमारी तोहफेमें मिलती है। एण्डू पत्नी की बेवफाई को माफकर नियमित रुप से पत्नी को मिलने अस्पताल जाता है।

अंत में एण्डू अपना मानसिक संतुलन खो बैठता है। वह इस बीमारी की दहशत में पागल हो जाता है। इस तरह एण्डू की जिंदगी बर्बाद हो जाती है। उसके मन में इस बीमारी से डर है। वह हमेशा नाम बदलता है। ताकि उसे कोई न पहचाने। आगे चलकर प्रभा जी ने इस उपन्यास में पति-पत्नी के बीच बढ़ती दूरीयॉ, परिवार विघटन की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला है।

कथा लेखिका डॉ.उषाकीर्ति राणावत लिखती है, कि प्रभा जी ने राश ट्रीय अंतराश ट्रीय स्तर पर चलने वाली राजनीति को अपने कथ्य में विश्लेषित कर युध्द की विभीषिका हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष, सत्ता परिवर्तन इत्यादि सामायिक विषयों का विवेचन संजीदगी के साथ किया है। [५]

स्त्री पक्ष -

स्त्री पक्ष उपन्यास जनसत्ता की १९९९ सबरंग पुरवणी में प्रकाशित हुआ है। यह प्रभा जी का अंतिम उपन्यास है। उपन्यास की नायिका वृंदा मारवाडी परिवार में कडे अनुशासन में पलकर वडी हुई है। वृंदा मासिक धर्म, यौन-शुचिता, विवाह इत्यादि पर गंभीरता से सोचती है। स्त्री का अर्थ क्या हैं? धर्म, ईश्वर से संबंधित तमाम बातों पर वह सोचती है। इन बातों को लेकर जब उनके मन में उलझन पैदा होती है, तो वह अपनी मॉ से पुछ्ती है। लेकिन मॉ से भी जवाब न मिलने पर वह अपनी शिक्षिका से उलझती रहती है। राजनीति पर भी वह गहन उध्ययन करती है कॉलेज में उनके अनेक दोस्त भी हैं, लेकिन एक हद तक। एक बार वह अपने प्रिय दोस्त के साथ नए साल की पार्टी पर शराब पिती है, और उसके बदले में बदनाम भी होती हैं। वृंदा का मित्र का एक दिन उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश करता है, लेकिन दूसरे मित्र द्वारा बचा ली जाती है। अपनी भूल का अहसास होने पर उसे बडा दु:ख होता है। उसे अपनी गलती पर पछ्तावा होता है।

अंत में वृंदा विवाह न करने का फैसला करती है। लेकिन मॉता-पिता के कहने पर वह विवाह करने के लिए तैयार होती है। वृंदा का विवाह सुमित से हो जाता है, जो डॉक्टरी पढ रहा है। शुरुआत में वैवाहिक जीवन ठीक-ठाक चलता हैं, लेकिन सुमित के डॉक्टर बनते ही वृंदा उसके व्यवहार से तंग आ जाती हैं। दोनों में खटपट चलती रहती है। एक दिन अचानक डॉ.सुमित के वृंदा कहॉ भुल हुई, इस पर सोचती है, लेकिन उसे जबाब नहीं मिलता। अंत में वृंदा तलाक के कागजाजों पर हस्ताक्षर कर देती हैं।

संदर्भ सूची -

१- अपने अपने चेहरे - प्रभा खेतान - पृ.सं-६
२- अपने अपने चेहरे - प्रभा खेतान - फ्लैप से
३- अग्नि संभवा - प्रभा खेतान - हंस पत्रिका - मार्च १९९२ - पृ.सं-५७
४- प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार - डॉ.उषाकीर्ति राणावत - पृ.सं-४७
५- प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार - डॉ.उषाकीर्ति राणावत - पृ.सं-७८